Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 03, July, 2020, pp. 275-277

निष्पादन बजटन – प्रबंधकीय नियंत्रण का एक उपकरण

डॉ. संतोष कुमार अग्रवाल*

iLrkouk

आधुनिक समय में बजटन नियोजन, मूल्यांकन एवं नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण प्रबंधकीय उपकरण है। आज निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र दोनों में अपनी पूर्व निर्धारित नीतियों के क्रियान्वयन हेतु निष्पादन बजटन को अपनाया जा रहा है। आज बजटन की किसी भी पद्धति के सफल होने के लिए वित्तीय पक्षके साथ–साथ भौतिक पक्ष पर भी ध्यान दिया जा रहा है। यानि किसी भी योजना के वित्तीय व्ययों का संबंध भौतिक उपलब्धियों से स्थापित किया जा रहा है। परंपरागत बजटन में केवल वित्तीय व्ययो पर ही ध्यान देने के कारण मूल्यांकन नहीं हो पा रहा था इसलिए इस पद्धति की आवश्यकता महसूस की गई। निष्पादन बजटन को कार्यक्रम बजटन, कार्यक्रम– सह –निष्पादन बजटन एवम नियोजन एवं निष्पादन बजटन पद्धति आदि नामों से भी जाना जाता है

निष्पादन बजट का विकास अधिक पुराना नहीं है सर्वप्रथम 1949 मेंहुवर आयोगने अपने प्रतिवेदनमें निष्पादन बजट का प्रयोग किया तथा संघीय सरकार को ऐसे बजट को अपनाने की सलाह दीजो कार्यों, कार्यक्रमों तथा गतिविधियों पर आधारित हो। भारत में भी प्रथम लोकसभा के दौरान इस प्रकार के बजट की मांग की गई बाद में प्रशासनिकसुधार आयोग ने1968 में अपने प्रतिवेदन में इस प्रकार के बजट को लागू करने के लिए कहा। आज देश की अनेक वित्तीय, बैंकिंग, बीमा संस्थाओं के कार्यों एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन उनके द्वारा पूर्व में तैयार किए गए निष्पादन बजटन के आधार पर किया जा रहा है।

निष्पादन बजटन व्यय एवं आय को कार्यों, कार्यक्रमों, गतिविधियों एवं परियोजनाओं के रूप में प्रस्तुत करने तथा किसी परियोजना के अंगभूत कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के भौतिक एवं वित्तीय पहलुओं को परस्पर संबंधित करने की एक तकनीक है। प्रोफेसर घोष एवं गुप्ता के अनुसार निष्पादन बजटन संक्रियाओं को कार्यों, कार्यक्रमों, गतिविधियों तथा परियोजना के रूप में प्रस्तुत करने की तकनीक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। कुल मिलाकर निष्पादन बजटनवित्तीय व्ययोका भौतिक लक्ष्यों तथा उपलब्धियों से संबंध स्थापित कर निष्पति मूल्यांकन हेतु प्रबंधकों के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इस प्रकार स्पष्ट है कि निष्पादन बजटन प्रणाली एक ऐसी तकनीक है जिसमें:

- उद्देश्य एवं लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है ।
- व्ययोंका कार्यात्मक वर्गीकरण किया जाता है।
- उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विकेंद्रित उत्तरदायित्व ढांचा तैयार करके कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जाता है तथा
- एक सुव्यवस्थित लेखांकन एवं प्रतिवेदन पद्धति के द्वारा वास्तविक निष्पत्ति की बजट लक्ष्यों से तुलना करके मूल्यांकन एवंनियंत्रण बनाया जाता है।

* सह आचार्य, ई.ए.एफ.एम.विभाग, श्री संत सुंदरदास राजकीय महिला महाविद्यालय, दौसा, राजस्थान।

निष्पादन बजटन के उद्देश्य

- परियोजना के उद्देश्यों को स्पष्ट करना
- निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने हेतु लक्ष्यों का निर्धारण
- लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भौतिक एवं वित्तीय बातों का निर्धारण
- निष्पादन कार्यों हेतु उत्तरदायित्व निर्धारित करना
- अधिकारों एवं दायित्वों का प्रत्यायोजन
- दीर्घकालीन उद्देश्यों को बजट से संबंधित करना
- भावी योजना के लिए तैयारी करना
- मूल्यांकन कार्य की व्यवस्था
- प्रबंध को नियंत्रण हेतु सुविधा प्रदान करना

निष्पादन बजटन की प्रक्रिया

- सर्वप्रथम परियोजना के उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं नीतियों की स्थापना की जाती है।
- इसके पश्चात व्यवसाय की समस्त कार्यों, कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को वर्गीकृत कर विश्लेषित किया जाता है।
- कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये प्रमापकों का निर्धारण किया जाता है। इन प्रमैपकोंके निर्धारण में लोचशीलता के साथ पर्याप्त अनुभव एवं शोध का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वित्तीय आवश्यकताओं के अनुसार संसाधनों का आवंटन करना। इसमें संबंधित अधिकारियों को उनके कर्तव्यों के अनुरूप पर्याप्त वित्तीय अधिकार दिए जाने चाहिए ।
- निष्पादन बजटन के मूल्यांकन के लिए विभिन्न मानदंडों का निर्धारण जैसेय निष्पादन अनुपात, लाभदायक अनुपात, तरलता अनुपात, उत्पादकता अनुपात, विनियोजित पूंजी की प्रत्यय दर, जवाबदेही निर्धारण एवं प्रमाप विचलन।
- स्वीकृत बजट प्रावधानों की सूचना विभिन्न बजट केंद्रों को प्रेषित कर कार्यक्रमों को लागू करवाने की कार्यवाही प्रारंभ करना तथाकार्यक्रमों के वित्तीय पहलू के साथ विशेष रुप से भौतिक पहलू पर भी ध्यान रखना।
- समय–समय पर कार्यक्रमों के मूल्यांकन की व्यवस्था करना जिससे किसी भी प्रकार के विचलन को सुधारने की कार्यवाही समय पर की जा सके। इस हेतु एक स्पष्ट प्रगति प्रतिवेदन पद्धति तथा व्यवस्थित लेखांकन विभागका भी होना आवश्यक है।

निष्पादन बजटन की उपयोगिता

निष्पादन बजट भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए बहुत उपयोगी है। प्रोफेसर गोयल के अनुसार यह है सरकारी गतिविधियों के जनता एवं विधायिका को अधिक बोधगम्य प्रस्तुतीकरण हेतु बेहतर कार्यक्रम –निर्धारण, निर्णयन, समीक्षा एवं नियंत्रण में मदद करता है। प्रोफेसर घोष एवं गुप्ता के अनुसार निष्पादन बजट सरकारी क्षेत्र के साथ–साथ व्यापारिक क्षेत्र में भी समान रूप से उपयोगी है। यह प्रबंध को भावी लक्ष्यों, नीतियों एवं उद्देश्यों के चयन में मदद करता है साथ ही वैकल्पिक कार्यक्रमों के मूल्यांकन में चयन को संभव बनाता है। इसमें संसाधनों के कार्यक्रम अनुसार तर्कसंगत बंटवारे के कारण संसाधनों की बर्बादी रूकती है। निष्पादन बजट एक

प्रकार का क्रियात्मक विवरण है, जिससे यह संस्था के उद्देश्य अनुसार प्रबंध में सहायक होता है। कार्यों के समुचित वितरण से सभी कर्मचारियों को अपने कार्य एवं दायित्व का स्पष्ट बोध रहता है, जिससे कर्मचारियों में कार्य को दूसरे पर टालने की प्रवृत्ति नहीं रहती है। उद्देश्य प्राप्ति हेतु लक्ष्यों के निर्धारण कार्य अनुसार इस तरह होता है की निर्धारित वित्तीय बजट से लक्ष्य निर्धारित समय में पूरे हो जाते हैं। प्राथमिकताओं के स्पष्ट निर्धारण से संस्था के लाभों में वृद्धि होती है। कार्य एवं दायित्व के स्पष्ट निर्धारण से कर्मचारियों की कुशलता का सही मूल्यांकन संभव हो पाता है। कर्मचारियों एवं अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है तथा प्रोत्साहित भी किया जा सकता है। कर्मचारियों की कार्य कुशलता में वृद्धि से संस्था में गुणात्मक एवं परिमाणात्मक सुधार संभव होता है।

निष्पादन बजटन की सीमाएं

निष्पादन बजट में परिमाणात्मक लक्ष्यों पर अधिक जोर दिए जाने के कारण कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का गुणात्मक मूल्यांकन नहीं किया जाता है। सामाजिक एवं व्यावहारिक क्षेत्र जहां स्पष्ट भौतिक लक्ष्य संभव नहीं है तथा वहां पर मापन कठिन होने के कारण यह तकनीक उपयोगी नहीं है। निष्पादन बजट की सफलता के लिए सुसंगठित संगठन का होना जरूरी है अतः इससे इतर संगठनों में इसकी सफलता सीमित है। इससे अकुशल प्रशासन को ठीक किया जाना संभव नहीं है। विकसित संचार व्यवस्था पर निर्भरता के कारण बहुत सी जगह इसकी सफलता संदिग्ध है। कर्मचारियों एवं अधिकारियों में सहकारिता की भावना की कमी एवं उनमें व्याप्त अज्ञानता, अकुशलता एवम् लापरवाही के कारण भी इससे अनुकूल परिणामों की आशा रखना व्यर्थ है। छोटे संगठनों में इससे लाभ की तुलना में धन एवं समय की बर्बादी अधिक है।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि निष्पादन बजटन एक साधन है न कि साध्य, यानी इसकी सफलता इसके उपयोगकर्ताओं पर एवं इसके सफल क्रियान्वयन पर निर्भर हैं।

संदर्भ गन्थ सूची

- Ali, M. Zathik. “Human Resource and the Budget.” Southern Economist (2002): 32.
- Chohan, Sujay. “Much Ado About Nothing.” Data Quest (2002): 80-85.
- Government of India. “Economic Survey.” Government of India. (Published Annually).
- Mathew, Dr Jomon. "Trends and Challenges of India’s Balance of Payments." (2013).
- Statistics, Indian Public Finance. "Statistics 2008-2009." Ministry of Finance, Department of Economic Affairs (2009).

♦❐♦